

ISSN 2321 - 5704

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

अंक 6, वर्ष 6, फरवरी 2019



राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर

आलेख

- समय की रेखा पर बदलती नारी 117
ऋतु यादव
- संविधान की उद्देशिका और कवि धूमिल 123
अफरोज बेगम
- समतामूलक समाज और आम्बेडकर के विचार 130
नंदी पटोदिया, दिवाकर शर्मा

समीक्षा

- ‘चीख’ : व्यापक जीवनानुभव की सृजनात्मक अभिव्यक्ति 137
अमरेन्द्र त्रिपाठी
- बुन्देले रणबाँकुरों के स्वातंत्र्य समर की गौरवशाली दास्तान 144
पंकज सिंह
- प्रकृति, मनुष्य और विज्ञान का औदात्य 151
हिमांशु कुमार

रिपोर्ट

- राजभाषा प्रकोष्ठ : कदम दर कदम 158
विनोद रजक



समतामूलक समाज और आम्बेडकर के विचार

—नंदी पटोदिया

—दिवाकर शर्मा

भारत की सामाजिक समरसता की भूमिका में डॉ. भीमराव आम्बेडकर के विचार और कार्य दोनों सराहनीय हैं। डॉ. आम्बेडकर एक बड़े समाजिक चिंतक एवं समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में विख्यात हैं। यदि 21वीं शताब्दी को आम्बेडकर शताब्दी कहा जाए, तो इसमें कोई शक नहीं है, क्योंकि सम्पूर्ण भारत के अलावा अन्य देशों में आम्बेडकर के विचारों एवं कार्यों को आम्बेडकर शताब्दी के रूप में मनाया जा रहा है। डॉ. भीमराव आम्बेडकर सिर्फ दलितों की वकालत नहीं करते हैं, बल्कि सभी मानव जाति समाज के हक की बात करते हैं। डॉ. भीमराव आम्बेडकर एक ऐसे महामानव थे, जिनका दिल हर शोषित और पीड़ित के लिए धड़कता था। उन्होंने संविधान के द्वारा सामाजिक न्याय को जमीन पर उतारने का काम किया। वे भारत के संविधान निर्माता होने के साथ-साथ महान समाज सुधारक, अर्थशास्त्री और उच्च कोटि के विद्वान भी थे। कन्हैयालाल चंचरीक के अनुसार “निःसंदेह पुणे में सामाजिक परिवर्तन, दलित-शूद्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा जातिप्रथा और अस्पृश्यता के निवारण, सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार का जो सूत्रपात फुले ने किया था, उसे बीसवीं सदी में डॉ. आम्बेडकर के दलित आंदोलन और दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के गैर-ब्राह्मण आंदोलन के नेताओं ने वैचारिक आधार प्रदान किया और सामाजिक-राजनीतिक तथा संवैधानिक अधिकार प्राप्त करने में आशातीत सफलता प्राप्त की।” इस प्रकार ज्योतिबा फुले, पेरियार और सावित्री फुले के आन्दोलन को आम्बेडकर ने आगे बढ़ाया।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर के विचार से सामाजिक समरसता का अर्थ है कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक रूप से सभी वर्गों को समान अधिकार प्राप्त हो। डॉ. आम्बेडकर आधुनिक भारत के महान चिंतक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, विधिवेत्ता, शोषितों के मुक्ति नायक, संघर्षशील, सामाजिक कार्यकर्ता व संविधान निर्माता के रूप में जाने जाते हैं। वे स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व के क्रांतिकारी आदर्शों को भारतीय समाज में स्थापित करना चाहते रहे। डॉ. आम्बेडकर के अनुसार जो भी प्रथा, परंपरा, विचारधारा, कानून या धार्मिक मान्यता इन मूल्यों-आदर्शों को प्राप्त करने में बाधक है, उनके वे आलोचक रहे। उन्होंने